एम. एम. कॉलेज जहानाबाद।
विभाग - हिन्दी
विषय - 'चन्द्रगुप्त' नाटक
वर्ग - स्नातक प्रतिष्ठा भाग 1.
शिक्षण माध्यम - वाट्स - एप
समय - 11 बजे से 12 बजे तक 6.8.2020
शिक्षक - डॉ. रमेश शर्मा
पाठ - देश काल एवं राष्ट्र भावना

प्रिय छात्र-छात्राओं।

पिछली कक्षा में हमलोगों ने देखा था कि किस प्रकार नाटककार ने स्त्रियों की भागीदारी युद्ध क्षेत्र में भी सुनिश्चित की है और वह देश की रक्षा में सहायक होती हैं, घायलों की सेवा में तत्पर होकर अपना योगदान देती हैं। युद्ध भूमि में ही मालविका के मानचित्र तैयार करने से यह ध्वनित होता है कि ऐसे विषय की शिक्षा भी तब स्त्रियों को मिलती थी।

व्यापार की स्थिति का भी आभास मिलता है। एक प्रांत से दूसरे प्रांतों में वणिक समुदाय का वाणिज्य वस्तुओं को लेकर आते जाते एवं व्यापार करते हैं। आर्यों की ऐसी रणनीति होती है कि निरीह जनता और कृषक को दुःख नहीं जाता। रण-भूमि के पास ही वे स्वच्छंदता से हल चलाते रहते हैं; पर यवनों की नीति इससे भिन्न दिखाई पड़ती है। वे आतंक फैलाना अपनी रणनीति का प्रधान अंग मानते हैं। निरीह जनता को लूटना, गाँवों को जलाना, उनके भीषण

वस्तु साधारण कार्य है।

राष्ट्र - भावना

राष्ट्र भावना का प्राचुर्य इस नाटक में विशेष रूप से प्रतिपादित है। प्रारम्भिक दृश्य में ही तक्षशिला के गुरुकुल में चाणक्य अपने शिष्यों को इसका मंत्र देता है —

'मालव और मागध को भूलकर जब तुम आर्यावर्त का नाम लोगो तभी वह (आत्म सम्मान) मिलेगा'। इसी प्रकार के भाव सिंहरण में भी मिलते हैं — 'परन्तु मेरा देश मालव ही नहीं' गांधार भी है। यही क्या समग्र आर्यावर्त है' इसके अतिरिक्त देश-सेवा के भाव से प्रेरित चन्द्रगुप्त, सिंहरण, अलका इत्यादि ने व्रत ही ले रखा है कि देश की मर्यादा और सम्मान बचाने में ही अपना जीवन लगा देंगे। विदेशियों के मुख से हमेशा भारतवर्ष की महिमा का बखान भी देश-गौरव का ही प्रतिपादित करता है। चन्द्रगुप्त और सिंहरण के भारतीय ऋण चुकाने का उल्लेख भी किया है इससे यह स्पष्ट होता है कि वे अपने को भारतीय राष्ट्र का प्रतिनिधि ही मानकर आचरण करते हैं। इसके अतिरिक्त अलका में इस भावना का पूर्णरूपेण प्रस्फुटन हुआ है। उसके देश-प्रेम में वर्तमान राजनीतिक आन्दोलन का व्यावहारिक प्रतिनिधित्व दिखाई पड़ता है।

(मेधा अग्र)
6.8.20